आचार्य विज्ञानभिक्षु और भारतीय दर्शन में उनका स्थान

A Study of Vijnānabhikshu and His Place in Indian Philosophy

डा० सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य

एम्० ए०, शास्त्री, साहित्यरत्न

संस्कृत विभाग, इलाहाबाद युनिवर्सिटी

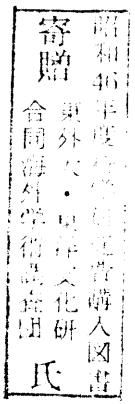

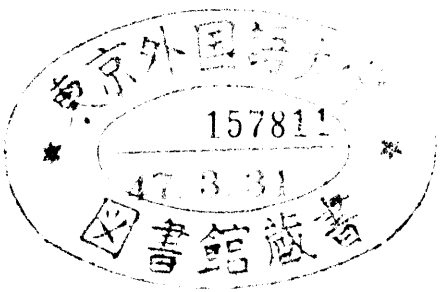

लोकभारती प्रकाशन

१५-ए, महात्मा गान्धी मार्ग इलाहाबाद—१

आभार प्रदर्शन

इस ग्रन्थ के प्रकाशन की प्रबल प्रेरणाएँ मुझे पूज्य गुरुवर्य डा० बाबूराम जी सक्सेना, पं० रघुवरमिट्ठूलाल जी शास्त्री तथा डा० रामकुमार जी वर्मा से निरन्तर प्राप्त होती रहीं, जिनके फलस्वरूप यह ग्रन्थ प्रकाशन की प्रक्रिया पार कर सका। इसके लिये इन गुरुजनों के प्रति मैं सर्वात्मना अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। परम कारुणिक गुरुवर्य डा० आद्याप्रसाद जी मिश्र ने समय-समय पर समुचित परामर्श देकर तथा इस ग्रन्थ का प्राक्कथन लिख कर मुझे जो प्रोत्साहन दिया है, उसके लिये मैं असीम आभार मानता हूँ। जिन अनेक विद्वानों की कृतियों एवम् सम्मतियों से इस ग्रन्थ के लिखने में मुझे सहायता मिली है उनके प्रति भी आभार प्रदर्शित करना मैं अपना परम कर्त्तव्य मानता हूँ।

प्रकाशन की समग्र व्यवस्था अपने हाथ में लेकर असीम कौशल एवम् सौहार्द के साथ इस ग्रन्थ को विद्वज्जनों के समक्ष लाने का सत्प्रयास करने वाले श्री दिनेशचन्द्र जी एवम् श्री राधेनाथ जी चोपड़ा [**लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद**] को भी हार्दिक धन्यवाद दिये बिना मैं नहीं रह सकता। और अन्त में, इस ग्रन्थ की प्रकाशन-परम्परा में सर्वदा एवम् सर्वविध सहायता देनेवाले अपने प्रिय भागिनेय श्री सतीशचन्द्र श्रीवास्तव्य एवम् श्री गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव्य तथा अपने प्रिय अनुज श्री रविचन्द्र श्रीवास्तव्य एवम् श्री राजेशचन्द्र श्रीवास्तव्य को मैं हार्दिक साधुवाद देता हूँ।

विजयादशमी
सं० २०२५ वि०

सुरेशचन्द्र श्रीवास्तव्य

विषयानुक्रमणी

पृष्ठ-संख्या

[१] भूमिका — ९

[२] विषयानुक्रमणी — १३-१६

प्रथम-पटल [वैयक्तिक-विवरण]

अध्याय १—आचार्य विज्ञानभिक्षु का परिचय [१९-४५]

[१] स्थान—साधनाक्षेत्र—जन्म स्थान—विचरण-स्थल।

[२] व्यक्तित्व।

[३] जीवन-काल, पृष्ठभूमि, समय-निर्धारण।

अध्याय २—आचार्य विज्ञानभिक्षु की रचनाएँ [४६-८८]

[१] सूचित रचनाएँ—प्रामाणिक रचनाएँ—रचनाओं का क्रम।

[२] रचनाओं का परिचयात्मक विवरण।

[३] वेदान्त ग्रन्थ—उपदेश रत्नमाला—विज्ञानामृत भाष्य—ग्रन्थ का स्वरूप—उपनिषद्भाष्य—ईश्वरगीताभाष्य।

[४] सांख्यग्रन्थ—प्रेरणाएँ—सांख्यप्रवचन—भाष्य का स्वरूप—सांख्यसार का स्वरूप।

[५] योगग्रन्थ—योगवार्तिक—प्रेरणाएँ—योगवार्तिक का स्वरूप—योगसारसंग्रह—प्रेरणाएँ योगसारसंग्रह का स्वरूप।

[६] रचनाओं की शैली।

द्वितीय-पटल [सिद्धान्त-सङ्कलन]

अध्याय १—आचार्य विज्ञानभिक्षु के दर्शन की रूपरेखा [९१-१००]

आचार्य विज्ञानभिक्षु के दर्शन की आधार-भित्ति—समन्वय की प्रवृत्ति—समन्वय का स्वरूप—वर्गीकरण की रीति।

पृष्ठ-संख्या

अध्याय २—आचार्य विज्ञानभिक्षु के वेदान्त-सिद्धान्त [१०१-१३९]

[१] ब्रह्ममीमांसा के अनुबन्ध—चतुष्टय, अधिकारी—ब्रह्मविद्या के विषय, प्रयोजन और सम्बन्ध।

[२] ब्रह्म—सत्ता—सिद्धि—ब्रह्म का स्वरूप—ब्रह्म की उपाधि—ब्रह्म के दो रूप—ब्रह्म जगत् का अधिष्ठान कारण है।

[३] जीव का स्वरूप।

[४] प्रकृति का स्वरूप—प्रकृति और अविद्या—प्रकृति की सत्ता—प्रकृति के रूपों का वर्गीकरण—माया—जीवोपाधि—जडजगत्।

[५] जगत्प्रपञ्च—नित्यता की सिद्धि—परिणामवाद—भेदाभेदवाद—मुक्ति का स्वरूप—मुक्ति के भेद—मुक्ति के साधन—ज्ञानकर्म और उपासना।

अध्याय ३—आचार्य विज्ञानभिक्षु के सांख्य-सिद्धान्त [१४१-१८१]

[१] प्रमाण—विवेचन—प्रमाण-प्रक्रिया—प्रमाणों के विशेष लक्षण।

[२] पुरुष—विचार—अस्तित्व—पुरुष का स्वरूप—पुरुष बहुत्व—उपाधि।

[३] पुरुष और जीव।

[४] पुरुष और ईश्वर।

[५] प्रकृति—विचार—प्रकृति का स्वरूप, प्रकृति का वर्णन।

[६] गुणों का स्वरूप।

[७] अविद्या।

[८] सृष्टि-विकास।

[९] कैवल्य।

पृष्ठ संख्या

अध्याय ४—आचार्य विज्ञानभिक्षु के योग-सिद्धान्त [१८३-२२८]

[१] योगस्वरूप—सम्प्रज्ञात, असम्प्रज्ञात—दोनों का प्रयोजन—दोनों का पारस्परिक सम्बन्ध, असम्प्रज्ञात के भेद और उनका स्वरूप—भव तथा उपाय—प्रत्यय—असम्प्रज्ञात योग—सम्प्रज्ञात योग के भेद।

[२] धर्ममेघ समाधि।

[३] समापत्तियाँ।

[४] योग—साधना के सोपान—उत्तम साधकों की साधना का स्वरूप—मध्यम साधकों की साधना का स्वरूप—मन्दाधिकारियों की योग साधना का स्वरूप।

[५] ईश्वर।

[६] योग-सिद्धियाँ।

[७] कैवल्य-मीमांसा।

[८] स्फुट विचार—स्फोट—स्फोट की प्रामाणिकता—क्षण-सिद्धि में प्रमाण।

तृतीय-पटल [स्थान-निर्धारण]

अध्याय १—आचार्य विज्ञानभिक्षु के दर्शन की तुलनात्मक समीक्षा— [२२९-२७३]

[१] समन्वय—समीक्षा।

[२] वेदान्त—समीक्षा—ब्रह्म—जीव—प्रकृति—भेदाभेदवाद—मुक्ति—मुक्ति की साधना—ज्ञान और कर्म की साधनरूपता।

[३] सांख्य—समीक्षा—प्रमाण—पुरुष विचार—प्रकृति और गुण विचार—परिणाम—सिद्धान्त और पुरुष का बन्ध—कैवल्य और उसकी साधना।

पृष्ठ संख्या

[४] योग—समीक्षा—योग साधना के सोपान—सिद्धियाँ—कैवल्य ।

[५] फुटकल चर्चा ।

[६] धार्मिक भावना ।

अध्याय २—आचार्य विज्ञानभिक्षु का भारतीय दर्शन में स्थान [२७५-२८९]

[१] दार्शनिक पृष्ठभूमि ।

[२] सांख्य-दर्शन में विज्ञानभिक्षु का स्थान ।

[३] योग-दर्शन में विज्ञानभिक्षु का स्थान ।

[४] वेदान्त-दर्शन में विज्ञानभिक्षु का स्थान ।

[५] उपसंहार ।

सहायक ग्रन्थों एवं पत्रिकाओं की सूची २९०-२९४

परिशिष्ट—१ २९५-२९६

संकेत-शब्दों का विवरण २९७-२९८

प्रथम पटल

[वैयक्तिक-विवरण]